डॉ. लक्ष्मी कुशवाह

भोपाल, मध्यप्रदेश

डॉ. सतीश चंद्र राज

उत्सव आजादी का

तीन रंग से बना तिरंगा
शान से जो लहराता है
देख के मन में उठे हिलोरे
वीरों की याद दिलाता है

भारत माँ की आन बचाने
हँस के वीर कुर्बान हुए
हिंदू मुस्लिम सिक्ख ईसाई
अलग धर्म इक जान हुए

सब ही कूँद पड़े थे तब तो
आजादी की जंग में
सबने पहन लिया था चोला
रंग के बसंती रंग में

वन्दे मातरम्– वन्दे मातरम्
कहते हुए भिड़ जाते थे
सुनके वीरों की हुंकार
फ़िरंगी डर – डर जाते थे

जिनके बल से मिली आजादी
उनको शीश नवाती हूँ
जाने – अनजाने वीरो का
मैं यशगान सुनाती हूँ

भारत की पावन भूमि की
मिट्टी माथे लगाती हूँ
बड़ी ही क़िस्मत वाली हूँ मैं
उत्सव आजादी का मनाती हूँ

आशा को कुछ नहीं सूझता

मन का मधुबन तुम्हें ढूँढता।

अंग अंग में प्रीत बसाये
सूने पथ पर नैन बिछाए
सपनों के काले दर्पण में
आशा को कुछ नहीं सूझता।

तरस गए अंतस के बादल
अश्रु कणों संग बह गए काजल
प्यासा पपिहा मेरे मन का
तृष्णा के संग नित्य जूझता।

चंचल पवन जो तुम तक जाए
संदेशा मेरी पहुँचाए
आ जा ओ परदेशी साजन
दुःख में जीवन आज डूबता।

बिना तुम्हारे सांझ सकारे
मन रटता है पिया पिया रे
बिना दरश की आँखें प्यासी
बिना परस के मन है ऊबता।

मन का मधुबन तुम्हें ढूँढता।